M.S. Swaminathan

Prof. Monkombu Sambasivan Swaminathan is globally revered as the father of India's Green Revolution. Born in Tamil Nadu, India, on August 7, 1925, Swaminathan was educated at Travancore and Madras Universities. He earned his Ph.D. in Genetics from the University of Cambridge in 1952 and received 85 honorary doctorates from institutions across continents. His scientific legacy is grounded in his work at the Indian Agricultural Research Institute (1954–1972), where he initiated the dwarf wheat breeding programme and spearheaded efforts to raise yields through genetic innovation and crop improvement.

From 1972 to 1979, he served s Director General of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR), during which he also designed and initiated the Agricultural Research Services (ARS) to enable lifelong specialisation for scientists. ARS helped attract and retain brilliant young scientists in the ICAR system. From 1972 to 1979, he concurrently served as Secretary of the Department of Agricultural Research and Education. From 1979 to 1980, he was Principal Secretary of the Ministry of Agriculture and Irrigation. He managed the 1979 drought as Secretary to the Government of India in the Ministry of Agriculture. Between 1980 and 1982, he served as a Member in charge of Agriculture and Rural Development in India's Planning Commission. From 1981 to 1984, he was Chairman of the U.N. Advisory Committee on Science and Technology for Development. From 1981 to 1985, he was the Independent Chairman of the FAO Council. From 1982 to 1985, he was founder-chairman of the Society for the Promotion of Wasteland Development (SPWD), a professional NGO committed to ecological restoration. He also founded the International Council for Research on Agro-Forestry (ICRAF) and served as its Chairman (1977–1982).

From April 1982 to January 1988, he served as Director General of the International Rice Research Institute (IRRI). At IRRI, he prioritised sustainable rice production and intra-generational and inter-generational equity in the research agenda.

Between 1984 and 1990, he served as President of the International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources (IUCN). From 1989 to 1996, he was President of the World Wide Fund for Nature (India). From 2002 to 2007, he served as President of the Pugwash Conferences on Science and World Affairs.

In addition to being a Fellow of the Indian National Science Academy and the Royal Society of London, Dr. M.S. Swaminathan is a Fellow of the Science Academies of Sweden, Italy, United States, the USSR and China. He is also a Founder Fellow of the Third World Academy of Sciences.

Over 60 years, Dr. M.S. Swaminathan worked in collaboration with scientists and policymakers on a wide range of problems in basic and applied plant genetics and agricultural research and development. He also helped develop a transparent and implementable method of recognising and rewarding the intellectual property contributions of tribal and rural families in the conservation and selection of plant genetic resources.

He has published several hundred papers in international journals and several books, including "Building a National Food Security System" (Indian Environmental Society, 1981) and "Science and Integrated Rural Development: (Concept Publishing Company, New Delhi, 1982).

He chaired several national and international committees of experts, including the Indian Expert Group on Programmes for the Alleviation of Poverty, Eradication of Leprosy and Blindness, the eco-development of Goa, the Himalayas and Western Ghats, and the preparation of a draft National Population Policy and a draft Biodiversity Act.

He also served as Chairman of the Advisory Panel on Food Security, Agriculture, Forestry and Environment to the World Commission on Environment and Development (WCED).

Among his many distinguished awards are the Ramon Magsaysay Award for Community Leadership (1971), the first award for serving the cause of women in development (1985), Padma Shri (1967), Padma Bhushan (1972), and Padma Vibhushan (1989). In 1986, he received the Albert Einstein World Award of Science. On October 6, 1987, he became the first laureate of the World Food Prize, regarded widely as the equivalent of a Nobel Prize in Agriculture. UNESCO designated Dr. M.S. Swaminathan in 1996 as UNESCO-Cousteau Professor in Ecotechnology for Asia.

During 2004- 06, Dr. M.S. Swaminathan served as Chairman of the National Commission on Farmers (NCF). On the basis of the report of the NCF, the Government of India announced a National Policy for Farmers in 2007. He was a Member of the Parliament of India (Rajya Sabha), from 2007-13. During 2010-13, he chaired the High Level Panel of Experts (HLPE) for the World Committee on Food Security (CFS).

Dr. M.S. Swaminathan passed away on September 28, 2023, in Chennai, leaving behind a monumental legacy of scientific innovation that advanced global food security and championed sustainable agriculture.

The Department of Posts proudly releases a Commemorative Postage Stamp in honour of M.S. Swaminathan, celebrating his visionary contributions that transformed Indian agriculture and played a pivotal role in making India a food-secure nation.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet :	:	Ms. Gulistaan
Text:	:	Reference from the content provided by Proponent

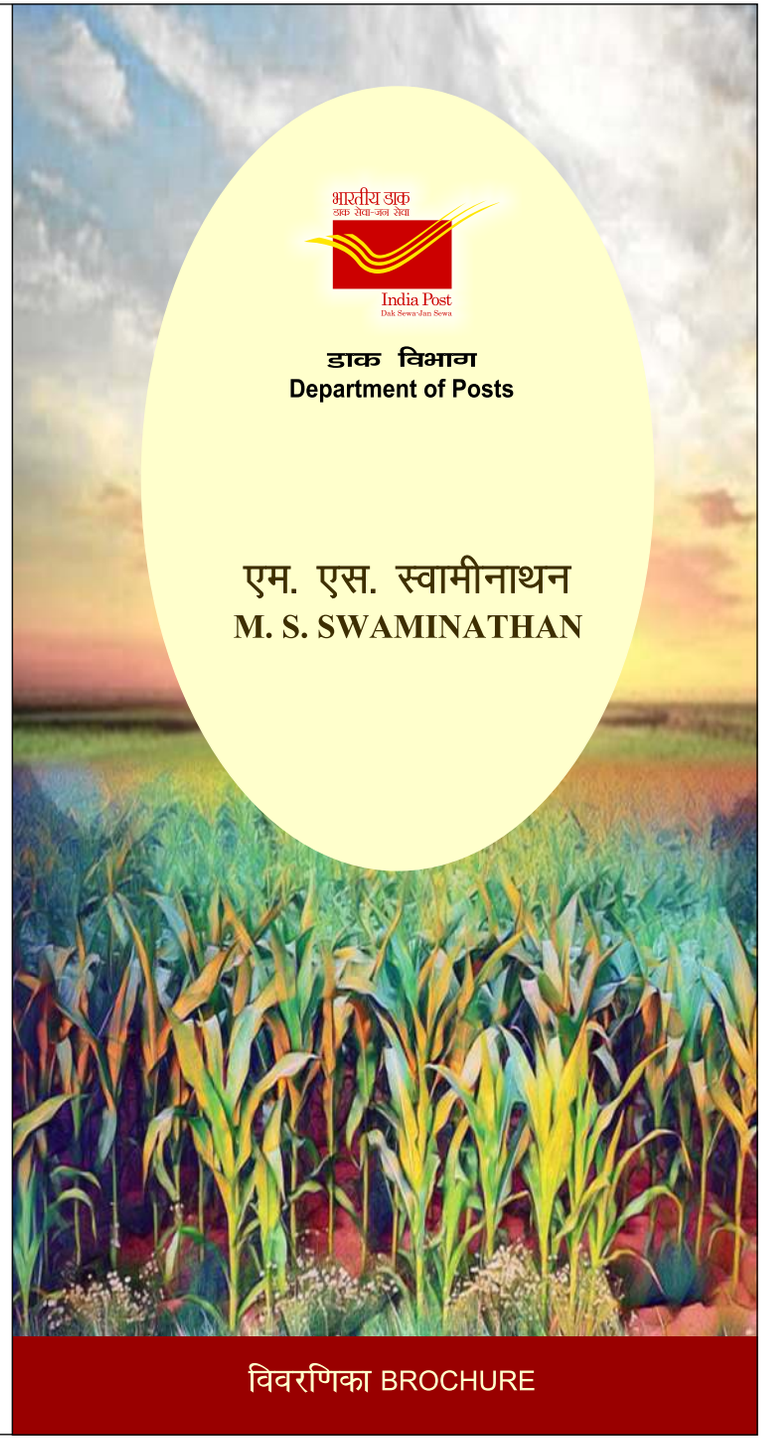

एम. एस. स्वामीनाथन

प्रोफेसर मोनकोम्बु सांबसिवन स्वामीनाथन, भारत की 'हरित क्रांति' के जनक के रूप में विश्वभर में विख्यात हैं। 7 अगस्त, 1925 को तमिलनाडु, भारत में जन्मे स्वामीनाथन ने त्रावणकोर और मद्रास विश्वविद्यालयों से शिक्षा ग्रहण की। वर्ष 1952 में, उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आनुवंशिकी विषय पर पीएचडी की। साथ ही, उन्हें विश्वभर के अलग-अलग महाद्वीपों में स्थित संस्थानों से 85 मानद डॉक्टरेट उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं। उनकी वैज्ञानिक विरासत की शुरुआत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (1954-1972) से हुई, जहाँ उन्होंने गेहूँ की छोटी किन्तु अधिक उपज प्रदान करने वाली किस्म के पौधों की पैदावार से संबंधित कार्यक्रम को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इसके अलावा, डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने आनुवंशिक नवाचार तथा फसल सुधार के माध्यम से उपज बढाने संबंधी तमाम कार्यक्रमों का नेतृत्व किया।

वर्ष 1972 से 1979 तक, डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद' (आईसीएआर) के महानिदेशक के रूप में कार्य किया, इस दौरान उन्होंने 'कृर्षि अनुसंधान सेवा' (एआरएस) की नींव रखी और उसकी समग्र रुपरेखा तैयार की इस सेवा के अंतर्गत वैज्ञानिकों को समस्त सेवाकाल के दौरान विभिन्न विशेषज्ञता पाठ्यक्रम व प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रावधान किया गया। एआरएस ने प्रतिभाशाली युवा व वैज्ञानिकों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद' से जुडने और वहाँ बने रहने हेतु प्रेरित किया है। 1972 से 1979 तक की अवधि के दौरान ही वे कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव के रूप में भी तैनात रहे। तत्पश्चात, 1979 से 1980 तक, उन्होंने कृषि एवं सिंचाई मंत्रालय के प्रधान सचिव के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। इसके अलावा, उन्होंने कृषि मंत्रालय में भारत सरकार के सचिव के रूप में कार्य करते हुए 1979 में पड़े भीषण सूखे से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ष 1980 से 1982 के बीच, डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने भारत के 'योजना आयोग' में कृषि एवं ग्रामीण विकास के प्रभारी सदस्य के रूप में कार्य किया। 1981 से 1984 तक, वे 'विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' संबंधी संयुक्त राष्ट्र सलाहकार समिति के अध्यक्ष रहे। 1981 से 1985 तक, वे एफएओ परिषद के 'स्वतंत्र अध्यक्ष' रहे। तत्पश्चात, वर्ष 1982 से 1985 तक, उन्होंने 'पारिस्थितिकीय पुनर्स्थापन' के लिए प्रतिबद्ध एक पेशेवर गैर-सरकारी संगठन 'सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ वेस्टलैंड डेवलपमेंट' (एसपीडब्ल्यूडी) के संस्थापक-अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय कृषि-वानिकी अनुसंधान परिषद (आईसीआरएएफ) की भी स्थापना की और इसके अध्यक्ष (वर्ष 1977-1982 तक) रहे।

अप्रैल, 1982 से जनवरी 1988 तक, डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने अंतराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) के महानिदेशक के रूप में कार्य किया। यहाँ उन्होने धारणीय 'चावल उत्पादन' पर प्राथमिकता आधार पर काम किया और अनुसंधान कार्यसूची में 'इंट्रा-जनरेशनल' और 'इंटर-जनरेशनल' साम्य स्थापित करने को प्राथमिकता दी।

वर्ष 1984 से 1990 के बीच, उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय, प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ' (आईयूसीएन) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। 1989 से 1996 तक वे 'वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (भारत)' के अध्यक्ष रहे। वर्ष 2002 से 2007 तक, उन्होने 'साइन्स एंड वर्ल्ड अफेयर्स' विषय पर पगवाश में आयोजित किए गए सम्मेलनों की अध्यक्षता की।

'भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी' और रॉयल सोसाइटी ऑफ लंदन' के फेलो होने के साथ ही डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन स्वीडन, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ तथा चीन की विज्ञान अकादमियों के भी फेलो हैं। वे 'थर्ड वर्ल्ड अकैडमी ऑफ साइन्सेज' के संस्थापक फेलो भी हैं।

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने 60 वर्षों से भी अधिक समय तक वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं के साथ मिलकर आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त पादक आनुवंशिकी तथा कृषि अनुसंधान एव विकास से संबंधित विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर कार्य किया। उन्होंने 'पादक आनुवंशिक संसाधनों' का संरक्षण करने और उनकी पहचान करने में आदिवासी एवं ग्रामीण परिवारों से प्राप्त होने वाले 'बौद्धिक संपदा' संबंधी योगदानों को मान्यता प्रदान करने तथा उन्हें पुरस्कृत करने के लिए पारदर्शी एवं व्यावहारिक पद्धति विकसित करने में भी सहायता की।

डॉ. एम. एस. स्वामीनथन ने ''बिल्डिंग ए नेशनल फूड सिक्योरिटी सिस्टम'' (इंडियन एनवायरमेंटल सोसाइटी, 1981) और सांईस एंड इंटीग्रेटेड रुरल डेवलपमेंट'' (कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 1982) सहित तमाम अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में सैकड़ों शोधपत्र और अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं।

उन्होंने, 'गरीबी उन्मूलन', 'कुष्ठ रोग एवं दृष्टिबाधिता उन्मूलन', 'गोवा, हिमालय तथा पश्चिमी घाटों का पारिस्थितिकीय विकास' संबंधी कार्यक्रमों और 'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति' तथा 'जैव विविधता अधिनियम' का मसौदा तैयार करने हेतु गठित 'भारतीय विशेषज्ञ समूह' सहित विशेषज्ञों की अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समितियों की अध्यक्षता की।

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने 'विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग' (डब्ल्यूसीईडी) के खाद्य-सुरक्षा, कृषि, वानिकी और पर्यावरण संबंधी सलाहकार पैनल के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें 'सामुदायिक नेतृत्व के लिए रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' (1971), पहला 'सर्विंग द कॉज ऑफ वुमन इन डेवलपमेंट' पुरस्कार (1985), पद्मश्री (1967), पद्म-भूषण (1972) और पद्म-विभूषण (1989) शमिल हैं। वर्ष 1986, में उन्हें 'अल्बर्ट आइंस्टीन वर्ल्ड अवार्ड ऑफ साइन्स' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात, 6 अक्टूबर, 1987 को वे पहले 'विश्व खाद्य पुरस्कार से विभूषित किए गए। इस पुरस्कार को व्यापक रूप से कृषि के क्षेत्र में 'नोबेल पुरस्कार' के समकक्ष माना जाता है। वर्ष 1996 में, यूनेस्को ने डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को एशिया के लिए 'ईको-टेकनॉलजी' के यूनेस्को-कौस्ट्यू प्रोफेसर के रुप में नामित किया।

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन, वर्ष 2004-06 के दौरान राष्ट्रीय किसान आयोग (एनसीएफ) के अध्यक्ष रहे। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर, भारत सरकार ने वर्ष 2007 में किसानों के लिए एक राष्ट्रीय नीति की घोषणा की। वर्ष 2007-13 तक वे भारतीय संसद (राज्यसभा) के सदस्य भी रहे। 2010-13 के दौरान, उन्होने विश्व खाद्य सुरक्षा समिति (सीएफएस) के लिए गठित 'उच्च स्तरीय विशेषज्ञ पैनल' (एचएलपीई) की अध्यक्षता की।

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन का निधन 28 सितंबर, 2023 को चेन्नई में हुआ। वे अपने पीछे वैज्ञानिक नवाचार की एक ऐसी गौरवशाली विरासत छोड़ गए जिसने वैश्विक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की और धारणीय कृषि को प्रोत्साहित किया।

डाक विभाग, एम. एस. स्वामीनाथन के सम्मान में स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह डाक-टिकट, भारतीय कृषि में युग-परिवर्तनकारी बदलाव लाकर भारत को खाद्य-सुरक्षा सन्पन्न राष्ट्र बनाने में इनके महत्वपूर्ण योगदान का प्रतीक है।

आभार :
डाक-टिकट/प्रथम दिवस
आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री गुलिस्तां

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक टिकटें	:	303225
Stamps Printed	:	303225
मुदिण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00